3

आईए

नहजुल बलाग़ा

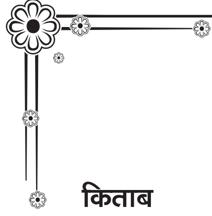
से सीखते हैं

(शैतान)

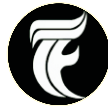
हुज्जतुल इस्लाम

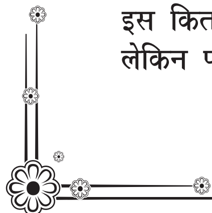
जवाद मोहद्दिसी

अनुवादकः अब्बास असग़र शबरेज़



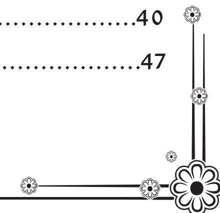
किताब	: आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं (3) (शैतान)
राईटर	: हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी
ट्रांस्लेटर	: अब्बास असग़र शबरेज़
पहला प्रिन्ट	: मार्च 2016
तादाद	: 2000
पब्लिशर	: ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ
प्रेस	: न्यु लाइन प्रोसेस, दिल्ली
क़ीमत	: 25 रूपए

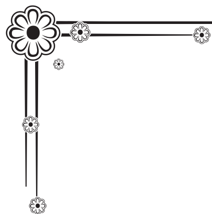






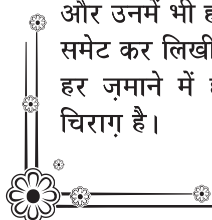
contents

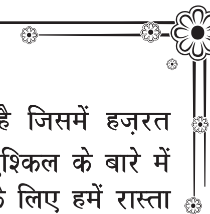




पहली बात

आज की दुनिया भीड़-भाड़, हुल्लड़-हंगामे और चकाचौंध की दुनिया है जिसमें इन्सान और इन्सानियत के ख़िलाफ़ हर वक़्त शैतानी चालें और शैतानी साज़िशें खेली जा रही हैं जिसकी वजह से हम जैसे इन्सान तरह-तरह की साइकॉलोजिकल व रूहानी बीमारियों और मुश्किलों में घिरे हुए हैं बल्कि मुश्किलों के एक ऐसे दलदल में फंसे हुए हैं जिस से निकलने का रास्ता भी नज़र नहीं आता। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि जिन दुनियावी बातों की वजह से हम इन मुश्किलों में फंसे हुए हैं, उन मुश्किलों से निकलने के लिए भी हम उन्हीं लोगों की तरफ़ देखते हैं जिन्होंने हमारे चारों तरफ़ इन मुश्किलों का जाल बुना है। नतीजा यह होता कि हम मुश्किलों में और फंसते जाते हैं। जबकि ज़िन्दगी की मुश्किलों से बाहर निकलने और एक सही ज़िन्दगी बिताने के लिए ख़ुदा ने अपनी किताब क़ुरआन और मासूम इमामों की शक्ल में इल्म के ख़ज़ाने हमारे पास भेजे हैं। इमामों व अहलेबैत[अ०] की ज़िंदगी और उनका बताया रास्ता हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता था और उनमें भी हज़रत अली[अ०] ने जो कुछ कहा या लिखा उस को समेट कर लिखी गई किताब नेहजुल बलाग़ा सबसे अलग है जो हर ज़माने में हमें सही रास्ता दिखाने के लिए सबसे रौशन चिराग़ है।





नेहजुल बलाग़ा एक ऐसी किताब है जिसमें हज़रत अली[अ०] ने ज़िन्दगी के हर मसले और हर मुश्किल के बारे में बात की है और उस मुश्किल से निकलने के लिए हमें रास्ता दिखाया है।

जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि दुनिया भर में मशहूर किताब 'नेहजुल बलाग़ा' में लिखी बातों को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] के कलाम को पढ़ना और समझना चाहते हैं ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

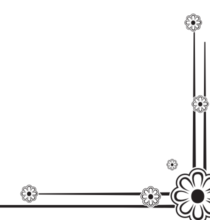
यह किताब **आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं** (3) ईरान के एक मशहूर राइटर और स्कॉलर हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी ने लिखी है जो ''शैतान'' यानी हमारे खुले दुश्मन के बारे में है। आपके सामने यह उसका हिन्दी ट्रांस्लेशन है।

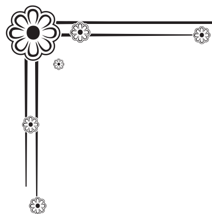
इस सीरीज़ की पहली कड़ी 'तौबा' और दूसरी 'दुआ' के बारे में थी जो दोनों छप चुकी हैं। अब यह इस सिलसिले की तीसरी कड़ी है।

इस सीरीज़ के अभी और भी हिस्से बाक़ी हैं। अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी तो वह भी जल्दी ही आपके सामने पेश किए जाएंगे।

किताब छपती है तो उसमें कहीं न कहीं कमियां या ग़ल्तियाँ रह ही जाती हैं। यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियाँ आपको दिखाई दें वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया सके।

ताहा फ़ाउंडेशन
लखनऊ





अपनी बात

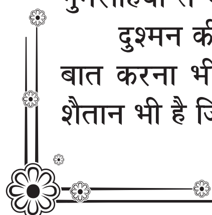
अगर इन्सान ख़ुदा और कमाल (Perfection) की तरफ़ सफ़र करना चाहता है तो उसे बहुत सी रुकावटों का सामना करना पड़ता है जिनमें से एक रुकावट शैतान है।

अब रहा यह सवाल कि शैतान क्या है और कौन है? हमारी ज़िंदगी में उसका क्या रोल है? वह किस तरह हमला करता है? या इस तरह के और भी दूसरे बहुत से सवाल ऐसे हैं जिनके बारे में जानना ज़रूरी है।

इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि जब इन्सान ख़ुदा की बन्दगी के लिए, ख़ुद को ख़ुदा के रंग में ढालने के लिए और ख़ुदा के बताए रास्ते पर चलने के लिए क़दम बढ़ाता है तो बहुत सी चीज़ें उसके रास्ते का पत्थर बन जाती हैं ताकि इन्सान को आगे बढ़ने से रोक दें और उसे सीधे रास्ते से हटाकर जहन्नम की तरफ़ ले जाएं।

इसका एहसास हम रोज़ाना अपनी ज़िन्दगी में हर वक़्त करते रहते हैं और इन्सानी हिस्ट्री इस तरह की गुमराहियों से भरी पड़ी है।

दुश्मन की पहचान बहुत ज़रूरी है इसलिए इस बारे में बात करना भी ज़रूरी है क्योंकि हमारा एक कट्टर दुश्मन शैतान भी है जिसने हमें गुमराह करने की क़सम खा रखी है





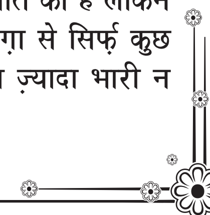
और क़ुरआने करीम ने बार-बार उसे 'अदुव्वुम मुबीन' यानी ख़ुला दुश्मन कहा है। ख़ुदा ने इन्सान से इस दुश्मन से होशियार रहने के लिए भी कहा है ताकि इन्सान शैतानी चालों से धोखा न खा जाए और उसके पीछे चलकर अपनी कामयाबी के दरवाज़ों को बन्द न कर दे।

क़ुरआनी आयतों, हदीसों, मासूमीन[अ०] की ज़िंदगियों, सीख देने वाली कहानियों-क़िस्सों और बुज़ुर्गों की नसीहतों में इस खुले दुश्मन से होशियार और दूर रहने पर जगह-जगह ज़ोर दिया गया है।

हज़रत अली[अ०] ने भी नहजुल बलाग़ा में इस बारे में बहुत ज़ोर दिया है। इस किताब में बहुत सी जगहों पर इन्सान को गुमराह करने के लिए शैतानी चालों, शैतान के पीछे चलने वालों की पहचान, शैतान के हथियारों, शैतानी चालों का निजी व समाजी ज़िंदगी पर असर, शैतान से मुक़ाबले का तरीक़ा वग़ैरा पर बहुत खुल कर बात की गई है।

हज़रत अली[अ०] ने हक़ के रास्ते पर चलने की चाहत रखने वाले तमाम इंसानों को हक़ का रास्ता दिखाया है और उन्हें इन शैतानी चालों से बचाकर उस रास्ते पर चलाया है जिस पर चलकर वह अपने ज़माने में ख़ुदा के बेहतरीन बन्दे बन गए थे। हज़रत अली[अ०] की इन नसीहतों और उसूलों को पढ़कर हम भी इस ख़तरनाक रास्ते से बचकर सीधे रास्ते पर चल सकते हैं।

इस किताब में आप जो कुछ भी पढ़ेंगे वह हज़रत अली[अ०] की अनमोल बातों को सामने रखते हुए लिखा गया है। इस सिलसिले में पूरी नहजुल बलाग़ा में इमाम अली[अ०] ने बहुत खुल कर तफ़सील (in details) बात की है लेकिन हम ने अपनी इस किताब में नहजुल बलाग़ा से सिर्फ़ कुछ ही बातों को लिया है ताकि हमारी किताब ज़्यादा भारी न हो।



उम्मीद है कि नहजुल बलाग़ा की रौशनी में ''शैतान की पहचान'' हमारी आंखों और हमारे दिल को खोल देगी ताकि हम अपने अंदर मौजूद अपने पाक दिल को बचा सकें। हमें चाहिए कि हम शैतान को इस बात की छूट ही न दें कि वह हमारी ज़िन्दगी को शैतानों से मुक़ाबले का मैदान और शैतानी चालों व धोखेबाज़ियों की जंग बना सके। इसके लिए ज़रूरी है कि हम शुरू ही से अपने दिल व दिमाग़ और अपनी ज़िन्दगी में शैतान के घुसने के सारे दरवाज़े बन्द कर दें।

फ़साद की आग एक चिंगारी से ही शुरु होती है।
यह चिंगारी धीरे-धीरे शोला बन जाती है।
इसलिए... चिंगारी ही को पैदा न होने दो
वरना हवस के शोले
तुम्हारी इज़्ज़त व आबरू बल्कि सब कुछ जलाकर राख कर देंगे।

ख़ुदा से दुआ है कि वह शैतान से मुक़ाबले के इस मैदान में हमारी मदद करे ताकि हम शैतानी चालों और चालबाज़ियों को रौंदते हुए अपने रास्ते में आने वाली हर रुकावट को तोड़ते हुए गुज़र जाएं और ख़ुदा और उसके दीन के रास्ते पर तेज़ी के साथ आगे बढ़ते जाएं।

जवाद मोहद्दिसी
क़ुम-ईरान

शैतान कौन है?

इन्सान का नेचर यह है कि वह नेकी और अच्छाई की तरफ़ अपने आप खिंचा चला जाता है लेकिन साथ ही एक मुश्किल यह है कि दो शैतानी ताक़तें हर वक़्त उसे बहकाने की कोशिश करती रहती हैंः एक ताक़त ख़ुद उसके अंदर मौजूद है जो उसकी दिली ख़्वाहिशें (Worldly Desires) हैं और दूसरी बाहर की इस दुनिया में है जिसे हम शैतान कहते हैं। यह दोनों ताक़तें ही इंसान को बहकाती रहती हैं जिसका रिज़ल्ट यह होता है कि इन्सान इन दोनों शैतानों के बहकावे में आकर गुनाहों की तरफ़ चल पड़ता है।

शैतान इसी धोखा देने वाली और गुमराह करने वाली चीज़ का नाम है। क़ुरआन ने बार-बार शैतान को 'अदुव्वुम मुबीन' यानी इन्सान का खुला दुश्मन बताया है। साथ ही आदम की औलाद को उसकी चालों से धोखा न खाने की नसीहत भी की है।

क़ुरआन करीम ने शैतान की कुछ बुराईयाँ इस तरह से गिनवाई हैंः

रास्ते से हटा देने वाला, गुमराह करने वाला, बुराईयों की तरफ़ बुलाने वाला, बुरा साथी, इन्सान को मग़रूर बनाने वाला, शराब और जुए से लोगों के बीच दुश्मनी पैदा करने वाला, बुरे कामों को अच्छा बनाकर दिखाने वाला, उम्मीदों में डुबो देने वाला, ख़ुदा को भुला देने वाला, शक पैदा करने वाला, इन्सान का दुश्मन, ख़ुदा की नाशुक्री करने वाला, ख़ुदा के हुक्म को न मानने वाला, फ़क़ीरी व ग़ुरबत फैलाने वाला, जहन्नम की तरफ़ बुलाने वाला...[1]

क़ुरआन में 70 बार 'शैतान' शब्द और 18 बार 'शयातीन' (शैतान शब्द का बहुवचन) आया है। इसके साथ ही साथ क़ुरआन में शैतान के बुरे कामों और उसकी चालों के बारे में भी बात की गई है। इस से पता चलता है कि इन्सान के साथ शैतान के इस रिश्ते को क़ुरआन कितना ख़तरनाक मान रहा है। यहीं से यह भी साफ़ हो जाता है कि इन्सान को शैतान से कितना ज़्यादा होशियार रहना चाहिए।

नहजुल बलाग़ा में शैतान के घिनौने रोल को इस तरह पहचनवाया गया है:

> यह (शैतान) ख़ुदा का दुश्मन, तास्सुब करने वालों का सरदार और बिगड़े हुओं का लीडर है। इसी ने सब से पहले तास्सुब की बुनियाद रखी है।[2]

हमारी इस दुनिया में शैतान का होना ख़ुदा की तरफ़ से इन्सान को आज़माने का एक ज़रिया भी है ताकि यह पता चल जाए कि असल में कौन ख़ुदा के रास्ते पर चलने वाला है और कौन ख़ुदा की बन्दगी में कमज़ोर है।

हज़रत अली[अ०] ने एक लम्बे ख़ुतबे में ग़ुरूर जैसी बुराईयों को बुरा कहते हुए इन्सान के अन्दर इन बुरी बातों के पैदा होने में शैतान के रोल को बयान किया है। शैतान ने ख़ुद ग़ुरूर से काम लिया था इसलिए वह दूसरों को भी मग़रूर होने पर उभारता है। ख़ुद उसने तास्सुब किया था इसलिए वह दूसरों को भी तास्सुब के जाल में फंसाता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> ख़ुदा ने आदम को सजदा करने का हुक्म देकर ख़ुदा के सामने अपना सर झुका देने वालों को ग़ुरूर करने वालों से अलग कर दिया, ग़ुरूर करने वालों को अपनी बारगाह से निकाल दिया और आख़िरत में उनकी सज़ा जलते हुए जहन्नम को बना दिया।[3]

शैतान को ख़ुदा की बारगाह से इसीलिए निकाला गया था क्योंकि वह अपने ऊपर अकड़ रहा था और उसने ग़ुरूर

से काम लिया था।

इस बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> अल्लाह ने शैतान के साथ जो किया तुम्हें उस से सबक़ (Lesson) लेना चाहिए। उसकी लम्बी-लम्बी इबादतों और भरपूर कोशिशों पर उसके एक घड़ी के घमण्ड ने पानी फेर दिया। जबकि उसने छः हज़ार साल तक ख़ुदा की इबादत की थी, फिर यह भी नहीं पता कि यह दुनिया के साल थे या आख़िरत के। अब शैतान के बाद कौन रह जाता है जो उस जैसा गुनाह करके अल्लाह के अज़ाब से बच जाए ?[4]

इसलिए हमें ख़ुदा की बन्दगी के रास्ते को पूरी होशियारी के साथ तय करना होगा ताकि शैतान जैसा लुटेरा हमें गुमराही की तरफ़ न ले जा सके।

हदीसों में है कि शैतान एक बहुत ही ख़ास तरह की मख़लूक़ (Creation) है जो तरह-तरह की शक्ल में हमारे सामने आ सकता है और हम में से हर एक को एक ख़ास तरह से धोखे या शक में डाल सकता है। हदीसों और दूसरी किताबों में ऐसे बहुत से क़िस्से बयान हुए हैं जिन से यह पता चलता है कि शैतान ख़ुदा के भेजे हुए नबियों और नेक बन्दों के पास भी इन्सान की शक्ल में आता था और उन्हें धोखा देने की कोशिश करता था। इसीलिए कहा गया है कि ख़ुदा का नाम और उसका ज़िक्र हमेशा ज़बान पर रहना चाहिए। हर वक़्त शैतान के हमले से अल्लाह की पनाह मांगते रहना चाहिए ताकि हम उसके धोखे व मक्कारी के जाल में फंसने से बच सकें।

1- सूरए बक़रा/268, सूरए माएदा/91, सूरए इसरा/53, सूरए नूर/21, सूरए मुजादेला/19 और दूसरी बहुत सी आयतें
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/92
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/190

कट्टर दुश्मन

इस चालबाज़ शैतान को जनाबे आदम[अ०] के सामने सजदा न करने की वजह से ख़ुदा की बारगाह से निकाला गया था। ग़ुरूर की वजह से उसने अपनी सारी मेहनत पर पानी फेर कर अपना सब कुछ बर्बाद कर दिया तो उसने इन्सान से दुश्मनी की ठान ली और क़सम खाई कि मोमिनों के अलावा बाक़ी सब लोगों को गुमराह करके उन्हें गुनाहों और बुराईयों की तरफ़ ले जाएगा।

हज़रत अली[अ०] इन्सान के साथ उसकी इस दुश्मनी के बारे में फ़रमाते हैं:

> मेरी जान की क़सम! उसने बुराईयों के तीर को कमान में जोड़ रखा है और बहुत पास से तुम्हें अपने निशाने पर रखकर कमान को ज़ोर से खींच लिया है।[5]

दुश्मन को दुश्मन ही समझना चाहिए और उसकी तरफ़ दोस्ती का हाथ कभी नहीं बढ़ाना चाहिए। न ही उसकी बातों में आना चाहिए। ऐसे न जाने कितने सीधे साधे लोग इस दुनिया में पाए जाते हैं जो शैतान से धोखा खा जाते हैं जिसकी वजह से शैतान उन पर कंट्रोल कर लेता है। फिर उनकी सारी सोच, अक़्ल, ताक़त और सलाहियतें (Skills) यानी सब कुछ शैतान के रास्ते में इस्तेमाल होता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> शैतान के साथ साझा न करो और न उसे अपने ऊपर छा जाने दो।[6]

शैतान की सारी कोशिश यह होती है कि बस किसी तरह से इन्सान के दिल व दिमाग़ और उसकी ज़िन्दगी में घुस कर उसे अपना और अपनी चालों का शिकार बना ले।

अगर इन्सान अपने ही अंदर शैतान को अपना अड्डा बना लेने दे तो यह बात बड़ी नासमझी भरी होगी क्योंकि इसका सीधा सा नुक़्सान यह होगा कि शैतान इन्सान की ताक़त व सलाहियतों (Skills) को ख़ुदा के रास्ते के बजाए दूसरी जगहों में लगा देगा। शैतान हमेशा ऐसे ही लोगों की तलाश में रहता है लेकिन होशियार इन्सान वह है जो शैतान की सवारी न बने लेकिन इसके लिए समझ और अक़्ल की ज़रूरत होती है।

इमाम अली[अ०] ज़ियाद इब्ने अबीह को एक ख़त में शैतान के हाथों खिलौना न बनने की नसीहत करते हुए होशियार करते हैं:

> शैतान मोमिन के आगे-पीछे और दाहिनी या बाईं तरफ़ से आता है ताकि उसे बेख़बर पाकर उस पर टूट पड़े और उसकी अक़्ल पर छापा मार दे।[7]

इस ख़त से पता चलता है कि इन्सान चारों तरफ़ से एक कट्टर दुश्मन के घेरे में है जो हर वक़्त मौक़े की तलाश में रहता है कि ज़रा सा भी मौक़ा मिल जाए तो फ़ौरन हमला कर दे।

शैतान की तरफ़ से इस धमकी का ज़िक्र क़ुरआने करीम में भी आया है।

सूरए आराफ़ की आयत/17 में है:

> इसके बाद सामने, पीछे और दाहिने-बाएं से आऊँगा और तू अकसर लोगों को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा।[8]

5- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-190
6- नहजुल बलाग़ा, ख़त-17
7- नहजुल बलाग़ा, ख़त-44
8- सूरए आराफ़/17

धोखेबाज़ शैतान

धोखेबाज़ इन्सानों को ‘शैतान या शैतान जैसा’ कहा जाता है। इस से पता चलता है कि धोखा देना शैतान का सबसे ख़ास काम है। शैतान झूठ के ज़रिए और शक पैदा करके बुरे कामों को अच्छा बनाकर पेश करता है और फिर इन्सानों को गुमराह करता है। इन्सान जितना ज़्यादा सीधा होता है उतनी ही जल्दी शैतान के धोखे में आ जाता है। इंसान अपनी जिहालत, सिधापे और दुश्मन की चालों को न समझ पाने की वजह से ही धोखा खाता है।

जंगे नहरवान में ख़्वारिज की फ़ौज सिर्फ़ अपनी शैतानी सोच की वजह से ही हज़रत अली[अ०] के मुक़ाबले पर आ गई थी। इन धोखा खाए हुए लोगों ने समाज के अम्न व सुकून को बर्बाद कर दिया था और क़त्ल व जंग की हालत पैदा कर दी था लेकिन इमाम अली[अ०] ने उनके साथ जंग की और उन्हें बुरी तरह हरा दिया।

हज़रत अली[अ०] जंगे नहरवान में एक दिन ख़्वारिज की लाशों की तरफ़ से होकर गुज़रे तो फ़रमायाः

> बर्बादी तुम्हारा नसीब बन जाए जिसने तुम्हें बहकाया और धोखा दिया।
> किसी ने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! उन्हें किसने भड़काया था ?
> इमाम ने कहा कि गुमराह करने वाले शैतान और बुराई पर उभारने वाले दिल ने जिसने उन्हें उम्मीदों के धोखे में डालकर उनके लिए गुनाहों का रास्ता खोल दिया। जीत के उन से

> वादे किये और इस तरह उन्हें जहन्नम में झोंक दिया।[9]

शैतान इन्सान को धोखा देने के लिए हर चाल चलता है। यहाँ तक कि वह एक दिन इंसान को पूरी तरह से जहन्नमी बना देता है। फिर इंसान के अंदर का शैतान यानी उसकी दुनियावी ख़्वाहिशें (Worldly Desires) उसको गुनाहों की खाई में ढकेल देती हैं।

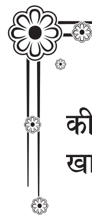
हज़रत अली[अ०] शैतान के असली चेहरे और उसकी धोखेबाज़ी को अच्छी तरह से जानते थे। इसीलिए अपने मानने वालों को हमेशा नसीहत किया करते थे कि शैतान के जाल में न फंसनाः

> बेशक! तुम्हारे लिए शैतान ने अपने रास्ते आसान कर दिए हैं। वह चाहता है कि तुम्हारे दीन की एक-एक गाँठ को खोल दे और तुम में एकता के बजाए फूट डाल दे।
> लेकिन तुम उसकी चालों और झाड़फूँक से मुँह मोड़े रहो, नसीहत करने वाले का तोहफ़ा क़ुबूल कर लो और अपने अंदर इसकी गाँठ बाँध लो।[10]

वह गुमराह लोग जो ख़ुदा और अपने तौहीदी रास्ते से अलग हो जाते हैं, वह बड़ी आसानी से शैतान के हाथों धोखा खा जाते हैं जिसके नतीजे में वह बुराईयों की तरफ़ चल पड़ते हैं। अगर शैतानी धोखे और उसकी चालबाज़ियाँ न होतीं तो रूहानी रास्ते में उन्हें इतना नुक़सान न उठाना पड़ता। अगर हम शैतान से धोखा खाए हुए इन्सानों की एक लिस्ट बनाएं तो यह लिस्ट बहुत लम्बी हो जाएगी।

जहन्नम वाले क़यामत में बड़ी शिद्दत से इस शर्मिंदगी व पछतावे की आग में जल रहे होंगे कि वह शैतान के चंगुल में क्यों फंस गए और उसके झूठे वादों के चक्कर में क्यों आ गए।

क़ुरआने करीम ने भी बार-बार इस कड़वी सच्चाई



की तरफ़ इशारा किया है कि किस तरह शैतान से धोखा खाए हुए लोग क़यामत के दिन पछताएंगे।

इमाम अली[अ०] भी इस तरफ़ इस तरह इशारा कर रहे हैं:

> शैतान ने उनको पुकारा वह तो लब्बैक कहते हुए उसकी तरफ़ लपक पड़े।[(11)]

यह उन काफ़िरों का हाल है जिन्होंने नबियों की तौहीद वाली दावत को क़ुबूल नहीं किया था। इसी तरह यह उन फ़ासिक़ों और खुले आम गुनाह करने वालों की भी हालत है जिन्होंने मासूमीन[अ०] व उलमा की ख़तरों से बचाने वाली नसीहतों को झुठला दिया था जिसके नतीजे में शैतान का शिकार बन गए थे।

मशहूर है कि किसी ने ख़्वाब में शैतान को देखा जो एक मोटी रस्सी लिये कहीं जा रहा था।

उस ने पूछा, ''यह रस्सी किसके लिये है ?''

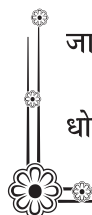
शैतान बोला, ''फ़ुलाँ आलिम के लिए, इसके ज़रिए उसको अपने जाल में फंसाकर अपने साथ ले जाना चाहता हूँ।''

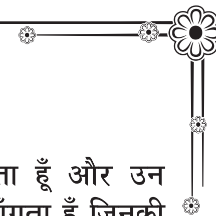
उसने पूछा, ''अगर उलमा के लिए इतनी मोटी रस्सियाँ इस्तेमाल करते हो तो हम जैसों के लिए क्या करते हो ?''

शैतान ने जवाब दिया, ''तुम जैसों के लिए किसी रस्सी की ज़रूरत नहीं होती। तुम जैसे लोग तो ख़ुद ही मेरी तरफ़ खिंचे चले आते हो। यह तो बस उलमा ही हैं जो अड़ जाते हैं। इसलिए उन्हें शिकार करना बड़ा सख़्त होता है।''

हज़रत अली[अ०] ने भी शैतानी चालों के लिए रस्सी, जाल और धोखे जैसे शब्द इस्तेमाल किए हैं।

इमाम अली[अ०] भी ख़ुदा से शैतान की चालबाज़ियों व धोखे से बचने के लिए मदद मांगते हैं। एक ख़ुतबे में इमाम



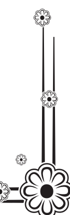


फ़रमाते हैं:

> मैं अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ और उन बातों के लिए उस से मदद माँगता हूँ जिनकी वजह से शैतान को निकाल दिया गया था और उसके फंदों व हथकंडों से अपनी पनाह में रखने वाली हैं।[(12)]

जब ख़ुद इमाम अली[अ०] शैतान को ख़ुद से दूर करने, उसकी चालबाज़ियों पर कंट्रोल पाने और उसके धोखे से बचने के लिए ख़ुदा से मदद मांगते है तो हमें तो इस सिलसिले में ख़ुदा से न जाने कितनी मदद माँगनी पड़ेगी।

9- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-323
10- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-119
11- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-142
12- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतब-149



शैतानी चालें

दुश्मन से मुक़ाबले के वक़्त हम उसके हमलों और उसकी चालों के तरीक़ों को जितना ज़्यादा पहचानते होंगे उतना ही हम ख़ुद को उसके हमलों से बचा सकते हैं।

शैतान इन्सान का कट्टर दुश्मन है जो हमेशा ताक में लगा रहता है ताकि तरह-तरह के बहानों से उसे गुमराह कर सके, उसे गुनाहों की तरफ़ ले जाए और दीन की तरफ़ बढ़ने से रोक दे।

नहजुल बलाग़ा में हज़रत अली[अ०] की अनमोल नसीहतों में इस बारे में बहुत सी क़ीमती बातें मिलती हैं। अब हम नहजुल बलाग़ा की रौशनी में शैतान की कुछ चालों को जानने की कोशिश करते हैं ताकि उसकी चालों से बच सकें।

1- बुराईयों को सजा-संवारकर पेश करना

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन्सान जब बुराईयों की तरफ़ जाता है तो वह उन बुराईयों को बुरा समझते हुए उनके पास नहीं जाता जैसे किसी नुक़सानदेह खाने की चीज़ को बहुत ख़ूबसूरती के साथ सजाकर किसी के सामने पेश किया जाए या कोई कड़वी दवाई किसी मीठी चीज़ के साथ बीमार को खिला दी जाए। शैतान भी बुरे कामों को इन्सान के सामने अच्छा बनाकर लाता है ताकि वह बेफ़िक्र होकर उन में उलझ जाए। बुरे को अच्छा बनाकर दिखाना शैतान की एक बहुत बड़ी चाल है और उसका एक बहुत

ख़तरनाक हथियार है क्योंकि इन्सान ख़ूबसूरत और सजी हुई चीज़ों की तरफ़ अपने आप खिंचा चला जाता है। इसलिए अगर एक चुड़ैल भी किसी फ़रिश्ते या इन्सान की शक्ल में उसके सामने आ जाए तो वह फ़ौरन उसकी तरफ़ खिंचा चला जाएगा और उसे दिल दे बैठेगा।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> तुम्हें उस दुश्मन से होशियार कर दिया गया है जो चुपके से दिलों में घुस जाता है और कानाफूसी करते हुए कानों में फूँक देता है। इस तरह वह गुमराह करके बर्बाद कर देता है और वादे करके बचकाना तसल्लियों से ढारस बंधाए रखता है। पहले तो बड़े से बड़े जुर्मों को सजा-संवार कर सामने लाता है और फिर बड़े-बड़े ख़तरनाक गुनाहों को हलका करके दिखाता है। जब बहकाए हुए दिल को गुमराही के रास्ते पर लगा देता है और उसे अपने फंदों में अच्छी तरह जकड़ लेता है तो जिसे सजाया था उसको बुरा कहने लगता है और जिसे हलका बनाकर दिखाया था उसकी अहमियत (Importance) बताने लगता है।[13]

इमाम अली एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं:

> शैतान को इसलिए इन्सान के पीछे लगाया गया है ताकि वह गुनाहों को इन्सान के सामने सजा-संवारकर ले आए और फिर इन्सान वह गुनाह कर बैठे।[14]

2- कल पर टाल देना

शैतान की एक चाल यह भी है कि वह इंसान को नेक काम के इरादे के वक़्त से ही शक में डाल देता है और आज, कल, परसों के चक्कर में फंसा देता है। यहाँ तक कि उसके हाथ से वक़्त ही निकल जाता है। जब इन्सान गुनाह

करता है और तौबा की फ़िक्र में पड़ता है तो उस वक़्त भी शैतान उस से आज-कल, आज-कल करवाता है ताकि गुनाहगार इन्सान को तौबा का मौक़ा ही न मिल सके और वह बुराईयों की दलदल में फंसता चला जाए।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> इस बात से डरो कि कहीं तुम्हें मौत ऐसे गुनाहों की हालत में न आ जाए जिन्हें करने के बाद तुम तौबा का ख़याल तो दिल में लाते थे मगर मौत तुम्हारे और तौबा के बीच आ जाए। ऐसा हुआ तो समझ लो कि तुमने अपने आपको बर्बाद कर डाला।[15]

आख़िर वह कौन सी चीज़ है जिसकी वजह से इन्सान गुनाह के बाद तौबा का मौक़ा गंवा देता है और उसे बाद पर छोड़ देता है ? शैतान की यह चाल कि जल्दी भी क्या है, अभी तौबा के लिए काफ़ी वक़्त पड़ा है... यही चीज़ वक़्त गंवाने की सबसे बड़ी वजह बन जाती है।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैं:

> शैतान तौबा की ढारस बंधाता रहता है कि अभी जल्दी ही क्या है। यहाँ तक कि मौत बेख़बरी की हालत में उस पर अचानक टूट पड़ती है।[16]

3- ग़ुरूर

शैतान का एक और दूसरा बड़ा हथियार यह है कि वह इन्सान के अन्दर ग़ुरूर और ख़ुद को बड़ा समझने की बीमारी पैदा करता है। शैतान ने अपनी इस बीमारी की वजह से ही ख़ुदा का हुक्म मानने से इनकार कर दिया था और जनाबे आदम[अ०] को सजदा नहीं किया था क्योंकि वह ख़ुद को जनाबे आदम से बड़ा समझता था। ग़ुरूर इन्सान को ख़ुदा की इबादत से भी रोक देता है, इल्म

(Knowledge) और हक़ीक़त (Truth) को समझने की राह में रुकावट बन जाता है, इन्सान को बेवजह फ़ख़्र करने और दूसरों पर हुक्म जमाने पर उभारता है, ग़ुरूर के बुरे नतीजे को अंदेखा करवा देता है और अपने आसपास के लोगों के साथ उसके रिश्तों को बिगाड़ देता है।

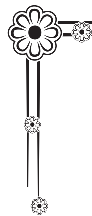
हज़रत अली[अ०] ग़ुरूर को शैतान का सबसे मज़बूत जाल बताते हुए फ़रमाते हैं:

> दुनिया में गुंडागर्दी की सज़ा, आख़िरत में ज़ुल्म के बोझ के अज़ाब और ग़ुरूर के बुरे नतीजे के ख़याल से अल्लाह से डरो क्योंकि यह (गुंडागर्दी, ज़ुल्म और ग़ुरूर) शैतान का बहुत बड़ा जाल और बहुत बड़ा हथकंडा है जो लोगों के दिलों में एक ख़तरनाक ज़हर की तरह उतर जाता है। न इसका असर कभी ख़त्म होता है और न इसका वार किसी से ख़ाली जाता है, न आलिम से उसके इल्म के बावजूद और न फटे-पुराने चीथड़ों में किसी फ़क़ीर से।[17]

यानी हर एक किसी न किसी तरह से शैतान के निशाने पर है और शैतान उसके अन्दर ग़ुरूर डाल कर हक़ और ख़ुदा की बन्दगी के रास्ते से उसे रोक देता है। ज़ाहिर सी बात है कि शैतान के इन ज़हरीले तीरों से बचने का इलाज सिर्फ़ तवाज़ो व इन्केसारी (Humility and Modesty) है। अब जिसके अन्दर भी यह ताक़त होगी वह आसानी से शैतान के जाल में नहीं फंसेगा।

इमाम अली[अ०] ने इसी ख़ुतबे में कई बार ग़ुरूर की बुराई करते हुए फ़रमाया है:

> जाहिलियत के ज़माने वाली ख़ुद पसंदी (Self-admiration) की वजह से फ़ख़्र व ग़ुरूर करने से अल्लाह से डरो क्योंकि यह दुश्मनी व कीने की जड़ और शैतान की



चालबाज़ियों का ख़ज़ाना है जिस से उसने पिछली उम्मतों और क़ौमों को बहकाया था। उन्हें उसने इतना बहकाया कि वह उसके ढकेलने और आगे से खींचने पर अपनी आँखें बंद करके जिहालत के अंधेरों और गुमराही के गढ़ों में तेज़ी से जा पड़े।[18]

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि अपने ऊपर न अकड़ना ही ग़ुरूर का इलाज है। नमाज़, रोज़ा, हज और दूसरी दीनी इबादतें भी इन्सान के अन्दर से ग़ुरूर की बीमारी को ख़त्म करने और उसके अन्दर इन्केसारी (Humility) की रूह फूँकने का बेहतरीन ज़रिया हैं।

इमाम अली[अ०] इसी ख़ुतबे में इस बात की तरफ़ भी इशारा कर रहे हैं:

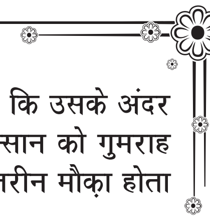
> अपने और अपने दुश्मन शैतान और उसकी फ़ौज के बीच तवाज़ो व इन्केसारी (Humility & Modesty) का मोर्चा बना लो।[19]

इसका मतलब यह है कि जो इस क़िले में आ जाए वह शैतानी हमलों से बच जाता है। शैतान की तरफ़ से ग़ुरूर का ज़हरीला तीर चलाया तो जाता है लेकिन वह तीर हम पर असर नहीं करता क्योंकि हमारे पास पहले ही से एक बेहतरीन ढाल होती है।

4- ख़ुद पसन्दी (Self-admiration)

ख़ुद पसन्दी या तो अपनी अच्छाईयों की वजह से पैदा होती है या फिर अपने कामों व कैरेक्टर की वजह से। ख़ुद पसंदी का रिज़ल्ट यह होता है कि इन्सान ख़ुद को और अपने कामों को ही पसंद करता है यानी दूसरे लोग और उनके काम उसे पसंद नहीं आते। इतना ही नहीं बल्कि वह दूसरों को और उनके कामों को भी गिरा हुआ समझता है। दूसरे शब्दों में यूँ कहा जाए कि अगर कोई ख़ुद को सारी बुराईयों से पाक-साफ़ समझता है और अपने कामों पर





ख़ूब इतराता है तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसके अंदर ख़ुद पसन्दी की बीमारी पैदा हो गई है। इन्सान को गुमराह करने के लिए शैतान के पास यह एक बेहतरीन मौक़ा होता है जिससे वह हमेशा फ़ाएदा उठाता है।

हज़रत अली[अ०] इस बीमारी के बारे में फ़रमाते हैं:

> देखो! ख़ुद पसन्दी (Self-admiration) से दूर रहना और अपनी जो बातें तुम्हें अच्छी लगें उन पर इतराना मत और न ही लोगों के बढ़ा-चढ़ाकर तारीफ़ करने को पसन्द करना क्योंकि शैतान को जो मौक़े मिला करते हैं उनमें यह सब से ज़्यादा असरदार मौक़ा है। इस ज़रिए से वह चाहता है कि नेक लोगों की नेकियों पर पानी फेर दे।[20]

शैतान इन्सान से या तो सिरे से नेक अमल करने का मौक़ा ही छीन लेता है या उसे दूसरों पर एहसान जताने के रास्ते पर लगाकर रियाकारी (दिखावे) में घेर देता है। अगर ऐसा भी न कर सका तो इन्सान के अन्दर ख़ुद पसन्दी डाल देता है ताकि वह बस अपने आप से ख़ुश रहे, अपने कामों को दूसरों से बेहतर समझे और अपनी इबादतों व अच्छाईयों पर ही इतराता रहे।

ख़ुद पसन्दी एक ऐसी बुराई है जो नेकियों और अच्छाईयों के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट बन जाती है। ख़ुद पसन्दी नेक कामों और अच्छी बातों के लिए सबसे ख़तरनाक बीमारी है। शैतान इंसान के दिल की खेती में यह बीज बोकर इन्सान को बहुत बड़ी मुश्किल में डाल देता है जिसकी वजह से उसके आमाल बर्बाद और सवाब ख़त्म हो जाता है।

5- दिल में पलने वाली ख़्वाहिशें

दिल में पलने वाली ख़्वाहिशें (Desires) अगर दीन व अक़्ल के दायरे (Circle) से बाहर हों तो इन्सान को गुनाहों



व बुराईयों की तरफ़ ले जाती हैं। यह ख़्वाहिशें इन्सान को एक दलदल की तरह अपने अन्दर डुबो लेती हैं जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं हैं।

शैतान इसी रास्ते से इन्सान के दिल में घुसता है और उसे गुनाहों की तरफ़ ले जाता है।

हज़रत अली[अ०] ने क़ाज़ी शुरैह को एक ग़ुस्से भरा ख़त लिखा था जिसमें शाहाना ठाठ-बाठ वाले महल को ख़रीदने पर उसको बहुत बुरा-भला कहा था।

इस ख़त में इमाम लिखते हैंः

> एक ऐसा घर जो इस धोखे भरी दुनिया में मरने वालों के मोहल्ले और हलाक होने वालों के इलाक़े में है। जिसके चारदीवारी व सीमाएं यह हैंः पहली सीमा आफ़तों से मिली हुई है, दूसरी सीमा मुसीबतों से मिली हुई है और तीसरी सीमा बर्बाद कर देने वाली ख़्वाहिशों (Desires) तक पहुँचती है और चौथी सीमा गुमराह करने वाले शैतान से जुड़ी हुई है। इसी तरफ़ उसका दरवाज़ा खुलता है।

इमाम इसी ख़त में आगे लिखते हैंः

> इस धोखा खाई उम्मीद व तमन्ना ने उस आदमी से इस घर को ख़रीदा है जिसे मौत ढकेल रही है, वह भी इस क़ीमत पर कि उसने क़नाअत (जो हाथ में है उसी पर राज़ी रहना) की इज़्ज़त से हाथ उठा लिया और ख़्वाहिशों (Desires) की ज़िल्लत में जा पड़ा।[21]

दिली चाहतों (Worldly Desires) की कोई सीमा नहीं होती और जो भी इन चाहतों के पीछे चल पड़ता है वह हमेशा के लिए जिस्मानी व रूहानी मुश्किलों में फंस जाता है। जिससे उसकी पूरी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है। किसी दलदल में फंसने का रिज़ल्ट इसके सिवा और क्या होगा कि इन्सान उसी में डूब कर ख़त्म हो जाए? दिल में पैदा होने

वाली ख़्वाहिशें कभी आँख और कान से फूटती हैं तो कभी जिस्मानी ख़्वाहिशों (Sexual Desires) की शक्ल में ज़ाहिर होती हैं, कभी पेट और दुनियावी ऐशो आराम की सूरत में बाहर आती हैं तो कभी शोहरत, ओहदे या पोस्ट की शक्ल में सामने आती हैं। माल-दौलत, दुनिया की मोहब्बत और इस तरह की दूसरी चीज़ें ही इस बुराई के पैदा होने की वजह बनती हैं। फिर यह सब शैतान के हथियार बन जाते हैं और वह अपने इन हथियारों के ज़रिए इन्सान को गुमराह व गुनाहगार बना देता है। इसीलिए अपनी दिली चाहतों पर और अपने ऊपर कन्ट्रोल करने को जिहादे अकबर (सबसे बड़ा जिहाद) कहा गया है।

6- ग़ुस्सा

इन्सान पर शैतानी कंट्रोल का एक हथियार ग़ुस्सा भी है। जब कोई ग़ुस्सा करता है तो वह अपनी नार्मल हालत से बाहर निकल जाता है। न उसकी सोच सही से काम करती है कि अब जो होने वाला है उसे देख सके और न ही उसके काम अक़्ल के हिसाब से हो पाते हैं। ग़ुस्सा अक़्ल के रास्ते में आने वाला सबसे बड़ा पत्थर है जिसकी वजह से इन्सान न जाने कैसे-कैसे भयानक काम कर बैठता है और फिर बाद में पछताता है लेकिन उस वक़्त कुछ नहीं हो सकता, सिवाए इसके के शैतान दूर खड़ा हंस रहा हो।

इमाम अली[अ०] एक ख़त में हारिस हमदानी को लिखते हैंः

> ग़ुस्से से डरो क्योंकि यह शैतान की फ़ौज में से एक बड़ी फ़ौज है।[22]

इमाम[अ०] एक दूसरे ख़त में इब्ने अब्बास को लिखते हैंः

> ग़ुस्से से बचो क्योंकि ग़ुस्सा शैतान के लिए अच्छा शुगून होता है।[23]

यह दोनों ख़त इमाम अली[अ०] ने अपने गवर्नरों व

हाकिमों को लिखे हैं और उन्हें याद दिलाया है कि कोई भी फ़ैसला ग़ुस्से की हालत में न करना क्योंकि इसका नतीजा बहुत ख़तरनाक निकलता है।

एक और जगह इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> ग़ुस्सा एक तरह की दीवानगी है क्योंकि ग़ुस्सा करने वाला बाद में पछताता ज़रूर है और अगर उसे पछतावा न हो तो समझ लो कि उसकी दीवानगी पक्की हो चुकी है।[24]

हज़रत अली[अ०] ने एक जगह ग़ुस्से से बचने की नसीहत करते हुए कहा हैः

> जल्दबाज़ी से काम न लो और सज़ा देने में इतनी देर करो कि तुम्हारा ग़ुस्सा कम हो जाए और तुम अपने ऊपर क़ाबू पा लो।[25]

7- कीना, तास्सुब और हसद (Jealousy)

अगर इन्सान के अन्दर यह तीनों बुराईयाँ पाई जाती हों तो शैतान फ़ौरन लालची बन जाता है। फिर दुश्मनी की आग भड़का कर और दिलों में हसद, जलन व तास्सुब का बीज बोकर लड़ाई-झगड़े का मैदान तैयार कर देता है।

अगर हमारे दीन ने हमें दुश्मनी, नफ़रत, तास्सुब, हटधर्मी और हसद जैसी चीज़ों से दूर रहने के लिए कहा है तो इसकी वजह यही है कि इन्सान शैतान के जाल में न फंसे और उसका शिकार न बन जाए ।

हज़रत अली[अ०] ने शैतान को तास्सुब करने वाले लोगों का लीडर कहा है और हमें इस बात की नसीहत की है कि होशियार रहना! कहीं शैतान तुम्हें अपने जाल में फंसा कर अपना हमदर्द न बना ले।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> यह ख़ुदा का दुश्मन तास्सुब करने वालों और बिगड़े हुओं का लीडर है।[26]

जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता हैः

> शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब व जुए के ज़रिए तुम्हारे बीच दुश्मनी पैदा कर दे।[27]

हज़रत अली[अ०] ने हसद और तास्सुब को इन्सानों के बीच दुश्मनी पैदा करने और उन्हें प्यार-मोहब्बत के माहौल से दूर करने के लिए शैतान का एक हथियार बताया है। इमाम ने इसका बेहतरीन इलाज यह बताया है कि हसद व जलन से दूर रहो, प्यार-मोहब्बत को फैलाओ और तास्सुब की आग को बुझा दो।

इमाम अली[अ०] इस बारे में कहते हैं :

> तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि अपने दिलों में छुपी हुई तास्सुब की आग और जाहिलियत की दुश्मनियों को ख़त्म कर दो क्योंकि एक मुसलमान के अंदर ग़ुरूर व ख़ुदपसन्दी शैतान की चालों और उसकी तबाही का ही रिज़ल्ट होती है। इन्केसारी (ग़ुरूर न करने) को सर का ताज बनाने, ग़ुरूर व ख़ुद पसंदी को पैरों तले रौंदने और ग़रूर का तौक़ गर्दन से उतारने का पक्का इरादा बना लो। अपने और अपने दुश्मन शैतान और उसकी फ़ौज के बीच तवाज़ो व इन्केसारी (ग़ुरूर न करने) का मोर्चा बना लो क्योंकि हर गिरोह में उसके फ़ौजी, उसके साथी व मददगार और सवार व पैदल सिपाही मौजूद हैं। तुम उसकी तरह न बनो जिसने अपने सगे भाई के मुक़ाबले में ग़ुरूर किया और वह भी ऐसी किसी अच्छाई के बिना जो अल्लाह ने उसे दी हो, सिवा इसके कि हसद भरी दुश्मनी से उसमें अपनी बड़ाई का एहसास पैदा हो गया और ख़ुदपसन्दी ने उसके दिल में ग़ुस्से की आग भड़का दी। फिर शैतान ने उसकी नाक में ग़ुरूर की हवा फूँक दी

जिसकी वजह से अल्लाह ने पछतावे को उसके पीछे लगा दिया और क़यामत तक के क़ातिलों के गुनाह उसके ज़िम्मे डाल दिये।[28]

क़ुरआन की वह आयत जो शराब व जुए के ज़रिए शैतान की तरफ़ से दुश्मनी की आग को भड़काने की तरफ़ इशारा करती है और जो इस तरह है, ''शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए तुम्हारे बीच दुश्मनी पैदा कर दे''[29], यह आयत एक तरह से वार्निंग है कि इन्सान शैतानी चालों में फंसकर अपना कंट्रोल न खो बैठे और जलन, हसद व ग़ुरूर उसे गुनाहगार न बना दें।

8- धीरे-धीरे

जिस तरह नशे की आदत धीरे-धीरे ही जड़ पकड़ती है या जैसे अगर किसी बीमारी का इलाज न किया जाए तो वह बीमारी धीरे-धीरे ख़तरनाक बीमारी बन जाती है उसी तरह शैतान के जाल में इंसान भी धीरे-धीरे ही फंसता है। धीरे-धीरे इन्सान बुराई की तरफ़ क़दम बढ़ाता है और फिर बर्बादी के कुँएं में डूब जाता है। शैतान का तरीक़ा ही यह है कि वह धीरे-धीरे अपने शिकार को अपने जाल में फंसाता है। छोटे गुनाहों में फंसाकर बड़े-बड़े गुनाहों का आदी बना देता है या फिर छोटे-छोटे गुनाहों को ही बिल्कुल छोटा बताकर इंसान को बड़े गुनाहों का शौक़ीन बना देता है।

इमाम अली[अ०] इस बारे में इन्सानों को होशियार करते हुए फ़रमाते हैंः

> शैतान के रास्तों और बुराईयों की जगहों से बचो। अपने पेट में हराम के लुक़मे न डालो क्योंकि तुम उसकी नज़रों के सामने हो जिसने गुनाहों को तुम्हारे लिए हराम कर दिया है और अल्लाह के हुक्म पर चलने का रास्ता आसान कर दिया है।[30]

हराम रोज़ी से अपना पेट भरना अगली ख़तरनाक स्टेज के लिए पहला क़दम है। किताबें इस बात से भरी पड़ी हैं कि न जाने कितने लोग ऐसे थे जो हराम कमाई और हराम रोज़ी की वजह से ऐसे बर्बाद हुए कि फिर कोई उनका नाम लेने वाला भी नहीं रहा। इमाम हुसैन[अ०] ने करबला में यज़ीद की ज़ालिम फ़ौज को बहुत नसीहत की थी और काफ़ी समझाया था लेकिन उन लोगों पर कोई असर नहीं हुआ। इसलिए इमाम ने उन से कहा था, ''तुम्हारे पेट हराम रोज़ी से भर गये हैं इसलिए तुम्हारे ऊपर मेरी नसीहत का कोई असर नहीं हो रहा है।''

क़ुरआन ने शैतान की इस पॉलीसी को ''ख़ुतुवाते शैतान'' यानी 'शैतान के क़दम' बताते हुए हम से कहा हैः

> 1- शैतान के क़दम पर मत चलो।
> 2- शैतानी क़दमों के रास्ते पर मत चलो।
> 3- ऐ ईमान वालो। शैतान के नक़्शे क़दम पर न चलना।[31]

जहाँ कोई एक क़दम शैतान के पीछे चला फिर वह उसके पीछे-पीछे उसके क़दम से क़दम मिलाकर चलता ही चला जाता है और धीरे-धीरे शैतानी दलदल में फंसता जाता है जिस से बाहर निकलना बहुत मुश्किल हो जाता है।

9- ख़ुद को भुला देना

ख़ुद को भुला देना ख़ुदा को भूल जाने के रास्ते में पहली सीढ़ी है। इसकी वजह से इन्सान अपने इस दुनिया में भेजे जाने की वजह और अपनी ज़िन्दगी के मक़सद (Cause) को भूल जाता है और यह भी भूल जाता है कि उसे इस दुनिया में क्या करना है, यहां तक कि वह ख़ुदा को भी भुला बैठता है। आख़िर में जो ख़ुदा को भुला देता है वह ख़ुद को भी भुला बैठता है।

क़ुरआने करीम ने इस बात को सूरए हश्र की

आयत/19 में इस तरह बयान किया हैः

> ख़बरदार! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया। उन्होंने ऐसा किया तो ख़ुदा ने भी उनको भुला दिया।

हज़रत अली[अ०] अपनी एक नसीहत में इस तरह फ़रमाते हैंः

> ऐ अल्लाह के बन्दो! बाक़ी बचे लोगों के साथ भी ज़माने का वही बर्ताव (Behaviour) रहेगा जो पिछले वालों के साथ था। जितना ज़माना गुज़र चुका है वह पलट कर नहीं आएगा और जो कुछ इसमें है वह भी हमेशा रहने वाला नहीं है। आख़िर में भी इसका तरीक़ा वही होगा जो पहले रह चुका है। इसकी मुसीबतें एक-दूसरे से बढ़ जाना चाहती हैं और इसके झण्डे एक-दूसरे के पीछे हैं। जैसे तुम क़यामत के मैदान में आ गए हो कि वह तुम्हें ढकेल कर इस तरह लिये जा रही है जिस तरह ललकारने वाला अपनी ऊँटनियों को ले जाता है। जो इन्सान अपने आप को संवारने के बजाए दूसरी चीज़ों में पड़ जाता है वह अंधेरों में परेशान और हलाकतों में फंसा रहता है। शैतान उसे बुराईयों में खींच कर ले जाते हैं और उसके बुरे कामों को उसके सामने सजा देते हैं।[32]

10- अलग-थलग होकर जीना

''फूट डालो और हुकूमत करो'' यह शैतान की पुरानी पॉलीसी है। लोगों के बीच फूट डालना, उन्हें एक-दूसरे से अलग करना और एक-दूसरे का दुश्मन बनाना शैतान को बहुत पसंद है जिसका नतीजा यह होता है कि इन्सान समाज से अलग हो जाता है और शैतान का शिकार बन

जाता है।

समाज में रहकर और दूसरों के साथ मिलकर उसी वक़्त काम हो सकता है जब इन्सान अपने आप से बाहर निकल आए और ख़ुद को ही सब कुछ समझना छोड़ दे। जो शैतान का शार्गिद बन जाता है वह 'ख़ुद' अपने आपको ही एक बुत बना लेता है और फिर अपनी ही पूजा करने लगता है। यह हालत उसे समाज से अलग कर देती है और यही शैतान के लिए बेहतरीन मौक़ा होता है इन्सान को अपनी तरफ़ खींचने का।

इमाम अली[अ०] ने बार-बार ज़ोर देकर इस बात की नसीहत की है कि इन्सान को चाहिए कि वह दूसरों के साथ मिलकर और समाज के साथ रहकर काम करेः

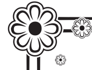
> उसी बड़े ग्रुप के साथ हो जाओ क्योंकि अल्लाह का हाथ एकता बनाए रखने वालों के ऊपर है। लड़ाई-झगड़ों से दूर हो जाओ क्योंकि अपने ग्रुप से अलग हो जाने वाला उसी तरह शैतान के हिस्से में चला जाता है जिस तरह गल्ले से कट जाने वाली भेड़ भेड़िये को मिल जाती है।[33]

11- दुनिया और माल व दौलत से मोहब्बत

बहुत से इन्सानों के बहकने की वजह दौलत की चमक-दमक होती है। अमीर बनने का ख़्वाब भी इन्सान को हलाल-हराम से दूर कर देता है। शैतान दौलत को इस तरह इन्सान के सामने लाता है कि उसका दिल उसकी तरफ़ खिंचा चला जाता है और वह उसकी तरफ़ दौड़ा चला जाता है जिसकी वजह से वह ख़ुदा को भी भूल जाता है।

क़ुरआन उन लोगों की तारीफ़ करता है जिन्हें दुनियावी चीज़ें और दौलत ख़ुदा से दूर नहीं करतीः

> वह मर्द जिन्हें कारोबार या ख़रीदना व बेचना ख़ुदा के ज़िक्र से दूर नहीं कर सकता।[34]



यूँ तो इस्लाम ने बिज़नेस, लेन-देन और रोज़ी-रोटी हासिल करने पर बहुत ज़ोर दिया है लेकिन साथ ही साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि इन्सान अपनी दुनिया में ही डूब कर न रह जाए यानी ऐसा न हो कि दुनिया की मोहब्बत उसे क़यामत और ख़ुदा से ही दूर कर दे। हदीसों में बाज़ारों व मार्केट को शैतान का सेंटर कहा गया है। यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि बाज़ार इन्सान को कहीं ख़ुदा से ही दूर न कर दें क्योंकि दुनिया की चमक-दमक इंसान को अपना दीवाना बना ही लेती है।

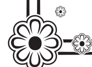
हज़रत अली[अ०] हारिस हमदानी के नाम अपने ख़त में नसीहत करते हुए एक बहुत ख़ास चीज़ की तरफ़ इशारा कर रहे हैंः

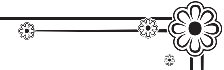
> बाज़ारी अड्डों में उठने-बैठने से दूर रहो क्योंकि यह शैतान की बैठकें और फ़ितनों के गढ़ होते हैं।[35]

कम बेचना, महंगा बेचना, सामान को जमा करके रखना, नक़ली माल बेचना, ख़रीदारों को धोखा देना, झूठी क़स्में खाना, ज़्यादती, नाइंसाफ़ी और सिर्फ़ अपने फ़ायदे के पीछे भागना... क्या यह सब बाज़ारों और पैसे के लेन-देन में नहीं होता ? बिल्कुल होता है और इसीलिए हमेशा ख़ुदा की याद, क़यामत की याद और हक़ की नसीहत के ज़रिए ही इन शैतानी चालों से मुक़ाबला किया जा सकता है।

हज़रत अली[अ०] ख़ुद बाज़ार में जाकर तक़वा (Piousness), इंसाफ़, सच्चाई व धोखाधड़ी से बचने और ख़रीदारों के साथ सख़्त बर्ताव (Attitude) से बचने जैसी बातों पर लोगों को समझाते थे और उन्हें होशियार करते थे कि कहीं शैतान के जाल में न फंस जाना।[36]

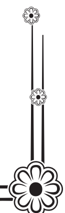
इस किताब के शुरू ही में हम ने क़ुरआन करीम की आयतों को सामने रखते हुए शैतान की कुछ बुराईयों की तरफ़ इशारा किया था। इस बारे में बात को पूरा करते हुए





इतना और कहना है कि क़ुरआनी आयतों में शैतानी हथकण्डों का ज़िक्र इस से भी ज़्यादा आयतों में हुआ है जैसेः इल्ज़ाम, लम्बी लम्बी ख़्वाहिशें (Worldly Desires), फ़िज़ूलख़र्ची, ज़िम्मेदारियों को पूरा न करना, बदज़बानी, कानाफूसी, झूठे वादे... यह सब शैतानी हथकण्डे हैं जिनकी तरफ़ क़ुरआन ने साफ़ इशारा किया है।

13- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-8
14- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-64
15- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
16- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-62
17- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-190
18- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-190
19- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-190
20- नहजुल बलाग़ा, ख़त-53
21- नहजुल बलाग़ा, ख़त-3
22- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
23- नहजुल बलाग़ा, ख़त-76
24- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-255
25- नहजुल बलाग़ा, ख़त-53
26- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-192
27- सूरए माएदा/91
28- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-192
29- सूरए माएदा/91
30- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-149
31- सूरए बक़रा/168, सूरए अनआम/142, सूरए नूर/21
32- सूरए हश्र/19, नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-155
33- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-125
34- सूरए नूर/37
35- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
36- बिहारुल अनवार, 103/102



जिन्नों व इन्सानों की शक्ल में शैतान

जिन्नों को ख़ुदा ने ऐसा बनाया है कि वह हमें दिखाई नहीं देते। जिन्न अच्छे भी होते हैं और बुरे भी। इब्लीस जिसे हम शैतान कहते हैं उसने ख़ुदा का हुक्म मानने से इनकार कर दिया था। क़ुरआन के मुताबिक़ वह भी एक जिन्न थाः

> शैतान के अलावा सब ने सजदा कर लिया कि वह जिन्नों में से था।[37]

जिन्नों में भी मुसलमान व काफ़िर और नेक व बुरे दोनों तरह के होते हैं।

क़ुरआन करीम इन्सानी व जिन्नी शैतानों का ज़िक्र इस तरह कर रहा हैः

> हम ने जिन्नों व इन्सानों के शैतानों को हर नबी का दुश्मन बताया है।[38]

दिलों में शक डालने वालों के शर से ख़ुदा से पनाह माँगना चाहिए क्योंकि इसकी वजह से इन्सान का दिल बुराईयों की तरफ़ खिंच जाता है। यह शक डालने वाले शैतान जिन्न भी होते हैं और इंसान भी। जैसा कि ख़ुद क़ुरआने करीम में हैः

> ऐ रसूल! कह दीजिए कि मैं इन्सानों के परवरदिगार की पनाह चाहता हूँ जो सब का

> मालिक है। सारे इन्सानों का माबूद है। शैतानी शकों के शर से जो ख़ुदा का नाम सुन कर पीछे हट जाता है और जो लोगों के दिलों में शक पैदा करता है, वह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से।[39]

इन आयतों से पता यह चलता है कि शैतान सिर्फ़ दिखाई न देने वाली एक मख़्लूक़ (Creature) ही नहीं है बल्कि इन्सानों की शक्ल में भी कुछ शैतान जैसे लोग होते हैं जो दूसरे इन्सानों को बहकाते रहते हैं और यह हमारे ही बीच में मौजूद होते हैं।

हज़रत अली[अ०] से जंग करने वाले लोग शैतान की फ़ौज वाले ही तो थे जो हक़ से मुक़ाबले के लिए आए थे। इसी लिए हज़रत अली[अ०] उन्हें शैतान या शैतानी लश्कर कहते थे।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> शैतान ने अपनी फ़ौज को जमा कर लिया है और अपने सवार व पैदल फ़ौजी समेट लिये हैं। मेरे साथ बेशक मेरी बसीरत (Wisdom) है। न मैंने ख़ुद कभी अपने को धोखा दिया और न मुझे कभी धोखा हुआ।

आगे इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> जान लो कि शैतान ने अपनी फ़ौज को भड़काना शुरु कर दिया है और अपनी फ़ौजें तैयार कर ली हैं ताकि ज़ुल्म अपनी आख़िरी सीमा पर और बातिल (शैतानी ताक़त) अपनी जगह पर पलट आए।[40]

यही वजह थी कि इमाम अली[अ०] जंगे नहरवान में लड़ने आए ख़्वारिज को शैतानी फ़ौज वाले कहते थे।[41]

इमाम फ़रमाते हैंः

> वह शैतान की फ़ौज व आग का शोला हैं।[42]

इस हिसाब से हर ज़ालिम ताक़त, ग़ैर इस्लामी हुकूमत और दुनिया के बिगड़े हुए लोग सब के सब शैतान हैं। इसी वजह से इमाम ख़ुमैनी ने भी अमेरिका को सब से बड़े शैतान का नाम दिया था क्योंकि वह दुनिया में शैतानी कामों का सबसे बड़ा सिम्बल है।

सारे बुरे और गंदे चैनल्स, ग़ैर-अख़्लाक़ी (Immoral) फ़िल्में, करप्ट मीडिया, बुराईयों के अड्डे, बुराईयां और उन्हें फैलाने वाले और वह लोग जो बुराईयाँ, जुर्म और गुनाह फैलाने में लगे हैं, सब इन्सानों की शक्ल में शैतान कहलाते हैं जो इन्सानियत के दुश्मन होने के अलावा और कुछ नहीं हैं। हमें इन सब को अपना सब से बड़ा दुश्मन समझना चाहिए, इन से दुश्मनी रखना चाहिए और इनके धोखे में नहीं आना चाहिए।

कितने ही ऐसे इन्सान हैं जो असल में शैतान ही हैं। तभी तो कहा गया है कि हर एक की तरफ़ आंख बंद करके दोस्ती का हाथ न बढ़ाओ।

ईरानी शायर हकीम सनाई ने क्या ख़ूब कहा हैः

> यह लोग जो तुम्हारे आसपास दिखाई दे रहे हैं इनमें हज़ारों शैतान हैं जिनके सिर्फ़ चेहरे दिखने में इन्सानों जैसे हैं। इसलिए सिर्फ़ चेहरा देखकर हर किसी को इन्सान नहीं समझना चाहिए। अक़्लमंद मोमिन ख़ूबसूरत चेहरों के पीछे छुपे असली शैतानी चेहरों को पहचान लेता है और आसानी से इन इन्सानी शैतानों के जाल में नहीं फंसता।

37- सूरए कहफ़/50
38- सूरए अनआम/112
39- सूरए नास/4-6
40- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-10 व नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-22
41- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-192
42- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-192

शैतान की फ़ौज

दुनिया में ऐसा भी होता है कि कुछ लोग अपने काम के लिए अपना एक शैतानी ग्रुप बना लेते हैं। यह लोग इसके लिए दूसरे इन्सानों को अपनी तरफ़ खींचते हैं, उन्हें अपने रास्ते पर लगाते हैं, अपने मक़सद (Target) को पूरा करने के लिए मैदान तैयार करते हैं और हर तरह के लोगों को अपने काम के लिए इस्तेमाल करते हैं।

शैतान भी अपनी पार्टी बनाता है और अपने लिए साथी व ताक़त जमा करता है। जिन लोगों की सोच शैतान की सोच से मिलती है और जो शैतानी मक़सद (Target) के लिए काम करते हैं हक़ीक़त में वही शैतानी फ़ौज वाले लोग होते हैं। इन लोगों का काम फ़ितने फैलाना, फ़साद करवाना, दूसरों को गुमराह करना और गुनाहों को फैलाना होता है। इन लोगों को मिलाकर शैतान का बनाया हुआ यह एक बहुत बड़ा जाल है जो सारी दुनिया में फैला हुआ है।

क़ुरआन ने भी शैतानी फ़ौज के बारे में बताया हैः

> उन पर शैतान छा गया है और उसने उन्हें ख़ुदा के ज़िक्र से दूर कर दिया है। जान लो कि यह शैतान का ग्रुप है और शैतान का ग्रुप बहरहाल घाटे में रहने वाला है।[44]

नहजुल बलाग़ा में भी कुछ गिरोहों (Groups) को शैतानी फ़ौज कहा गया है।

इमाम अली[अ०] ने उन लोगों को शैतान के पैदल-सवार सिपाहियों और शैतान के लिए काम करने वालों में गिनाया है जिन्होंने ख़ुदा की हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी

और बड़ी ख़राबियाँ फैलाई थीं और उथल-पुथल मचाई थी।

वह बेवफ़ा लोग जिन्होंने इमाम अली[अ०] के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी और बसरे में जंगे जमल में मुक़ाबले पर आ गए थे, उनके बारे में इमाम फ़रमाते हैंः

> तुम्हें पता होना चाहिए कि शैतान ने अपने ग्रुप को भड़काना शुरु कर दिया है और अपनी फ़ौजें तैयार कर ली हैं ताकि ज़ुल्म अपनी आख़िरी सीमा पर और बातिल (ग़लत ताक़तें) अपनी जगह पर पलट आएं।[45]

इमाम अली[अ०] ने एक ख़ुतबे में मुनाफ़िक़ों के बारे में बात करते हुए उन्हें शैतान की फ़ौज बताया है और एक क़ुरआनी आयत की बुनियाद पर शैतानी फ़ौज को नुक़सान उठाने वालों में गिनवाया है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> वह शैतान का ग्रुप और आग का शोला हैं। (जैसा कि क़ुरआन में है कि) यह शैतान का ग्रुप है और जान लो कि शैतान का ग्रुप ही घाटा उठाने वाला है।[46]

अलग-अलग क़ौमों और गिरोहों (Groups) के वह बड़े-बड़े लोग जो बातिल (ग़लत ताक़तों) की तरफ़ से हक़ के ख़िलाफ़ दुश्मनी में लगे हुए हैं और शैतान के लिए काम कर रहे हैं, वह भी इसी ग्रुप में आते हैं।

इमाम अली[अ०] लोगों को उन बुज़ुर्गों और समाज के मशहूर लोगों की अंधी तक़लीद करने से मना करते हैं जो गुरूर करते हैं, जो ख़ुद को ही सब से बड़ा समझते हैं और हक़ के सामने नहीं झुकते।

इस बारे में इमाम अली[अ०] का कहना हैः

> शैतान ने इन्हें गुमराही की सवारी बना लिया है और इन से एक ऐसी फ़ौज तैयार कर ली है जिस से वह लोगों पर हमला करता है और

> उन्हें बर्बाद करता है।[47]

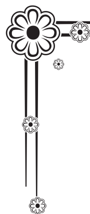
यही है शैतान की फ़ौज और उसके सिपाहियों में शामिल होना और शैतान की फ़ौज में रहकर हक़ से जंग करना। अब इस से बढ़कर बुरा और क्या हो सकता है कि इन्सान शैतान का साथी और उसके कामों को पूरा करने वाला बन जाए।

इमाम अली[अ०] एक जगह शैतान की फ़ौज में शामिल होने और उसका साथी बन जाने के बारे में फ़रमाते हैंः

> उन्होंने अपने हर काम का करता-धरता शैतान को बना रखा है और उसने उनको अपना नौकर बना लिया है। उसने उनके सीनों में अण्डे दे दिये हैं और बच्चे निकाले हैं जो उन्हीं की गोद में रेंगते और उछलते-कूदते हैं। वह देखता है तो उनकी आँखों से और बोलता है तो उनकी ज़बानों से। उसने उन्हें ग़ल्तियों के रास्ते पर लगाया दिया है और बुरी बातें सजाकर उनके सामने रख दी हैं जैसे उसने उन्हें अपनी हुकूमत में अपना साथी बना लिया हो और उन्हीं की ज़बानों से अपनी ग़लत बातों के साथ बोलता हो।[48]

इस तरह यह लोग शैतान के साथी और उसके चेले बन जाते हैं, उसकी तरफ़ से कही गई बातों को दोहराते हैं और उस के कामों को पूरा करते हैं। यह सब दूसरे छोटे-छोटे शैतानों के फलने-फूलने का घर भी बन जाते हैं और आख़िर में शैतान के नौकर-चाकर और उसके लिए काम करने वालों में बदल जाते हैं।

44- सूरए मुजादिला/19
45- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-22
46- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-194
47- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-192
48- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-7

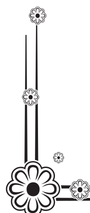


हमारा अक़ीदा और शैतान

शैतान शुरु से ही इस बात के लिए मशहूर रहा है कि वह इन्सानों की हिदायत के रास्ते में रूकावटें खड़ी करता है और उन्हें गुमराह करते हुए ख़ुदा के भेजे हुए नबियों के रास्ते पर खड़ा होकर रास्ता रोक लेता है। सबसे पहले जिसने बुतों की पूजा को फैलाया वह शैतान ही था। अगर किसी उम्मत में गुमराही पैदा हुई है, अगर जनाबे मूसा की क़ौम गाय की पूजा में लग गई थी, अगर मुश्रिकों ने नबियों के रास्ते में रूकावटें पैदा की हैं, अगर ग़लत मज़हब व फ़िरक़े बने हैं, तो यह सब कुछ शैतान की चालों की वजह से ही हुआ है। आज भी ऐसा ही हो रहा है।

यहाँ तक कि शैतान मोमिनों को भी कभी-कभी शक में डाल देता है, सही-ग़लत को आपस में मिला देता है और चीज़ों को लोगों के लिए ऐसा बना देता है कि वह धोखा खा जाएं। शैतान ने क़सम खाई है कि वह क़यामत तक आदम की औलाद को गुमराह करेगाः

> 1- उसने कहा तो फिर तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं सबको गुमराह करूँगा।
>
> 2- उसने कहा कि बस जिस तरह तूने मुझे गुमराह किया है मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊँगा।
>
> 3- उसने कहा कि परवरदिगार! जिस तरह तूने मुझे गुमराह किया है मैं भी इन बन्दों के लिए ज़मीन में अपना सामान सजाऊँगा और सबको एक साथ गुमराह करूँगा।





> 4- क्या तूने देखा है कि यह क्या चीज़ है जिसे मेरे ऊपर फ़ज़ीलत (Priority) दे दी है। अब अगर तूने मुझे क़यामत तक की छूट दे दी तो मैं इनकी औलाद में कुछ लोगों के अलावा सबका गला घूँटता रहूँगा।[49]

इसका एक तरीक़ा सोच और अक़ीदे में इन्सान को गुमराह करना है। दूसरा रास्ता अख़्लाक़ी मामलों में (Morally) गुमराह करना, ख़ुदा के हुक्म को न मानने देना, नये-नये फ़िरक़े बनवाना और नई-नई बिदअतें फैलाना है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> जो शक के जाल में फंस जाता है उसे शैतान अपने पंजों से रौंद डालते हैं।[50]

इसका मतलब शक की हालत में बाक़ी रहने से शैतान को हमला करने का मौक़ा मिल जाता है। शैतान शक को गहरा बनाकर इनकार में बदल देता है और फिर गुमराह कर देता है। कहने वालों ने कितनी अच्छी बात कही है, ''शक गुज़र जाने का रास्ता है, ठहरने का नहीं।''

इमाम अली[अ०] इस बारे में कहते हैंः

> ख़ुदा ने जनाबे आदम को जन्नत में जगह दी, उसे उनके लिए सूकून की जगह बनाया और शैतानी चालों और उसकी दुश्मनी से भी होशियार किया लेकिन शैतान ने आदम को धोखा दे ही दिया ताकि उन्हें इस बेहतरीन जगह से बाहर निकाल दे। उसने उनके यक़ीन को शक में बदल दिया था और उनके इरादे को कमज़ोर बना दिया था।

इमाम अली आगे फ़रमाते हैंः

> आदम ने यक़ीन को शक और इरादे की



मज़बूती को कमज़ोरी के हाथों बेच डाला।[51]

शैतान की इस चाल से मुक़ाबला करना चाहिए और अपने अक़ीदे को शक की सूली पर चढ़ने से बचाना चाहिए। यह भी जान लेना चाहिए कि दिमाग़ में शक डालने वाले लोग इन्सानों की शक्ल में शैतान ही होते हैं जो असल में शैतान के चेले हैं।

शैतान जब किसी पर हमला करता है तो उसे फ़ितने की आग में झोंक देता है। इसी लिए हम देखते हैं कि बहुत से लोग अक़ीदे की गुमराही में फंसकर ख़ुदा के बताए सीधे रास्ते से दूर हो जाते हैं। वैसे इस की वजह सही-ग़लत का आपस में मिल जाना और यह न समझ पाना होता है कि सही क्या है और ग़लत क्या है। जब सही-ग़लत की हद तोड़ दी जाती है और फ़ितना खड़ा कर दिया जाता है तो फ़ितने की धूल में हक़ नज़र ही नहीं आता।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> फ़ितनों की शुरूआत वह दिली ख़्वाहिशें (Worldly Desires) होती हैं जिनको इंसान किसी भी तरह पूरा करना चाहता है और वह नई-नई बनाई हुई रस्में होती हैं जिनमें क़ुरआन की मुख़ालिफ़त की जाती है। जिन्हें फैलाने के लिए कुछ लोग दीन के ख़िलाफ़ एक-दूसरे के मददगार बन जाते हैं। अगर बातिल (ग़लत) में हक़ की मिलावट न होती तो वह ढूँढने वालों से छुपा न रहता। अगर हक़, बातिल के धोखे से पाक-साफ़ सामने आता तो दुश्मनी रखने वाली ज़बानें भी बन्द हो जातीं। लेकिन होता यह है कि कुछ इधर से लिया जाता है और कुछ उधर से और दोनों को आपस में मिला दिया जाता है। यही वह वक़्त होता है जब शैतान अपने दोस्तों पर छा जाता है।[52]

जब सही-ग़लत आपस में मिल जाएं तो लोगों के अंदर उन्हें एक दूसरे से अलग करने की ताक़त नहीं रह जाती और वह हर चीज़ में शक करने लगते हैं। यही शैतान के लिए फ़ायदा उठाने और दूसरों को गुमराह करने का बेहतरीन मौक़ा होता है। शक पैदा करना और बातिल (ग़लत) को हक़ जैसा बनाकर दिखाना शैतान की एक बहुत बड़ी चाल है। दूसरों को गुमराह करने के लिए शक को हथियार बनाना शैतान का एक ज़बरदस्त फ़न (Skill) है। इसीलिए उसके जाल में फंसने वाले वही लोग होते हैं जो शकों में उलझ जाते हैं या अपनी ख़्वाहिशों (Desires) के क़ैदी बन जाते हैं।

शैतान की एक चाल यह भी है कि वह इन्सान को ऐसे कामों की तरफ़ खींचता है जिनमें ज़्यादा सोचने-समझने से रोका गया है। शैतान उसके खोजी मिज़ाज को उभारता है और फिर इसी रास्ते से गुमराही की तरफ़ ले जाता है। फिर दिमाग़ में ऐसे-ऐसे शक पैदा करता है जिनसे न जाने कैसे-कैसे टेढ़े सवाल पैदा हो जाते हैं जिनके जवाब भी इन्सान की समझ में नहीं आते।

नहजुल बलाग़ा में इमाम अली[अ०] का एक ऐसा लम्बा ख़ुतबा भी है जिसमें इमाम ने एक ऐसे आदमी के सवाल का जवाब दिया है जिसने इमाम से कहा था कि हमारे सामने ख़ुदा की ऐसी पहचान करवाइये जैसे हम उसे अपनी आँखों से देख रहे हों ताकि इसके ज़रिए हमारे दिल व दिमाग़ में ख़ुदा की मोहब्बत व मारेफ़त अच्छी तरह बैठ जाए। इमाम अली[अ०] ने उसकी बात सुनकर सबको मस्जिद में बुलाया और मिंबर पर जाकर एक ख़ुतबा दिया जिसमें अल्लाह की तारीफ़ करने के बाद ख़ुदा और उसकी तौहीद के बारे में बहुत गहरी बातें कीं, इस दुनिया में मौजूद ख़ुदा की क़ुदरत के अजीब व ग़रीब नमूने बयान किये और फिर आसमानी दुनिया व फ़रिश्तों के बारे में खुल कर बताया। इस ख़ुतबे के एक हिस्से में क़ुरआन करीम को हिदायत का बेहतरीन

और सबसे ज़्यादा भरोसेमंद ज़रिया बताते हुए कहाः

> ऐ (अल्लाह के बारे में) सवाल करने वाले! जिन बातों का तुम्हें क़ुरआन ने पता दिया है उन में तुम उसके बताए रास्ते पर चलो और उसी की हिदायत के नूर से रौशनी लेते रहो। जो चीज़ें क़ुरआन में वाजिब नहीं हैं और न नबी और दूसरे मासूमीन ने उनके बारे में कुछ कहा है, बल्कि सिर्फ़ शैतान ने उनके जानने पर तुम्हें उकसाया है, उसका इल्म अल्लाह ही के पास ही रहने दो और यही तुम पर अल्लाह के हक़ की आख़िरी सीमा है।(53)

इन्सान की सोचने-समझने की ताक़त बहुत कम होती है। वह ख़ुदा की ज़ात की असलियत को नहीं समझ सकता। इसी लिए इसी हद तक ख़ुदा के बारे में ग़ौर करना चाहिए जितना क़ुरआन ने कहा है। अगर इन्सान इस से आगे बढ़ेगा तो गुमराही का ख़तरा हो जाएगा मगर शैतान इन्सान को इसी तरफ़ ले जाने की कोशिश करता है और चाहता है कि इन्सान इस सीमा से भी आगे जाकर ख़ुदा की ज़ात में खोज-बीन करे जिसका रिज़ल्ट अक़ीदे के बर्बाद होने और गुमराही के अलावा और कुछ नहीं निकलता।

इमाम अली[अ०] एक ख़ुतबे में नबियों की बेसत के दौर को एक ऐसा ज़माना बताते हैं जिसमें शैतान ने लोगों के ज़ेहनों को अपने क़ाबू में कर रखा था जिसकी वजह से उन्हें ख़ुदा की पहचान और उसकी इबादत से दूर कर दिया था।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> अकसर लोगों ने अल्लाह का वादा बदल दिया था। इसलिए वह उसके हक़ को भुला बैठे। दूसरों को उसका शरीक बना डाला। शैतानों ने उसकी मारेफ़त से उन्हें दूर और उसकी इबादत से अलग कर दिया। अल्लाह ने उनमें अपने रसूल भेजे और लगातार नबी भेजे।(54)

शैतान लोगों को ख़ुदा की इबादत से दूर करके अपनी तरफ़ बुलाता था जिसकी वजह से वह अपनी तौहीदी बुनियाद को भुला बैठते थे।

एक और जगह पर इमाम अली[अ०] साफ़-साफ़ इस तरह फ़रमाते हैंः

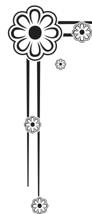
> अल्लाह तआला ने हज़रत मोहम्मद[स०] को हक़ के साथ भेजा था ताकि उसके बन्दों को क़ुरआन के ज़रिए बुतों की पूजा से ख़ुदा की इबादत की तरफ़ और शैतान के बताए रास्ते पर चलने के बजाए अल्लाह के हुक्म को मानने की तरफ़ निकाल ले जाएं।(55)

नबियों को ख़ुदा ने इसी लिए दुनिया में भेजा था ताकि वह लोगों को उनके उस वादे की तरफ़ वापस ले आएं जिसमें ख़ुदा ने उन से वादा लिया था कि वह शैतान के बताए रास्ते पर नहीं चलेंगे और उसकी पूजा नहीं करेंगे क्योंकि वह उनका खुला दुश्मन हैः

> ऐ आदम की औलाद! क्या हम ने तुम से इस बात का वादा नहीं लिया था कि ख़बरदार! शैतान की इबादत न करना क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(56)

एक जगह इमाम अली[अ०] बेसत से पहले की दुनिया के हालात का नक़्शा इस तरह खींचते हैंः

> मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद[स०] उसके बन्दे और उसके रसूल हैं जिन्हें मशहूर दीन, बयान किया गया निशान, लिखी हुई किताब, चमकता हुआ नूर, चमकती हुई रौशनी और फ़ैसला करने वाली चीज़ के साथ भेजा गया। उस वक़्त हालत यह थी कि लोग ऐसे फ़ितनों में घिरे हुए थे कि दीन के बंधन टूटे हुए और हालात ख़राब थे। अल्लाह की मुख़ालिफ़त



खुले आम हो रही थी और शैतान को मदद दी जा रही थी। ईमान बेसहारा हो गया था। वह शैतान के पीछे लग कर उसके रास्तों पर चलने लगे थे और उसके घाट पर उतर पड़े थे। उन्हीं की वजह से उसके झंडों के फरहरे ऐसे फ़ितनों में हर तरफ़ लहराने लगे थे जो उन्हें अपने सुमों से रौंदते और खुरों से कुचलते थे।(57)

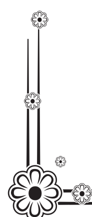
अब तक की बातों का निचोड़ यह है कि सोच और अक़ीदे का मैदान भी शैतान का पसंदीदा मैदान है जहाँ से वह लोगों को हक़ व हिदायत और ख़ुदा के बताए सीधे रास्ते से दूर करके उन्हें बुतों की पूजा, शिर्क, ख़ुदा के इनकार, क़यामत और जन्नत व जहन्नम के बारे में शक करने पर मजबूर कर सकता है।

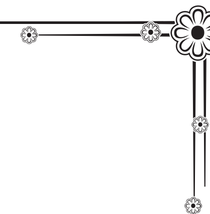
क्या वह लोग जो झूठे दावों या इमामे ज़माना[अ०] के साथ मुलाक़ात की कहानियाँ गढ़कर आम लोगों को अपना मुरीद बनाते हैं, शैतान नहीं हैं ?

क्या वह लोग जो किसी ख़ास फ़िरक़े, दीन या शरीअत के दावेदार हैं और नासमझ जवानों के पाक दिलों को अपना चहीता बनाते हैं और फिर उन्हें अपने घिनौने कामों, अपने मक़सदों (Goals) और अपनी दुनिया के लिए इस्तेमाल करते हैं, शैतान नहीं हैं ?

इसलिए हमेशा आंखें खुली रखिए
और होशियार रहिए!

49- सूरए सॉद/82, आराफ़/16, हिज्र/39, इसरा/62
50- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/31
51- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-1
52- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-50
53- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-91
54- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-1
55- नहजुल बलाग़ा ख़ुतबा-145
56- सूरए यासीन/60
57- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-2





आख़िरी बात

समझदार इन्सान वह है जो पिछले ज़मानों में हारे हुए लोगों से कुछ सीखे।

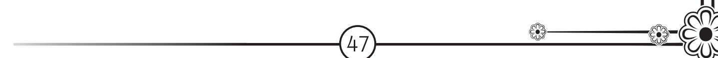
हज़रत आदम[अ०] से अब तक का इतिहास अच्छे-बुरे और मोमिन-काफ़िर के बीच जंगों से भरा हुआ है। कोई भी ज़माना धोखेबाज़ी व झूठ से ख़ाली नहीं रहा है। हर इन्सान, यहाँ तक कि नबियों व रसूलों को फ़साने के लिए भी शैतान की तरफ़ से धोखों का जाल बिछाया गया है।

जो भी ख़ुदा के इस दुश्मन को न पहचाने वह हारे हुए लोगों में से है।

जो अपने दुश्मन की दुश्मनी के रास्तों और तरीक़ों को न पहचाने, वह एक न एक दिन शैतान के जाल में फंस ही जाता है।

ख़ुदा के खुले एलान के हिसाब से शैतान इन्सान का कट्टर, क़सम खाने वाला और खुला दुश्मन है जिसकी तरफ़ दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ाया जा सकता क्योंकि वह हर रास्ते से इन्सान को बहकाने की कोशिश करता है और हर मौक़े से फ़ायदा उठाता है। उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि बस किसी तरह मोमिनों की ताक़त को कमज़ोर कर दे और गुमराह लोगों की गिनती को बढ़ाता रहे। साथ ही अपने उस जहन्नम के लिए अपने साथी भी इकट्ठा करे जहाँ उसे ख़ुद भी जलना है।

ध्यान रहे! शैतान के बहुत से साथी और मददगार भी हैं जो हर जगह फैले हुए हैं और शिकार की तलाश में लगे





रहते हैं।

ऐसे में जिसकी आँख, दिल, ज़बान, कान और जिस्म के दूसरे हिस्से उसके कंट्रोल में न हों उसे पता होना चाहिए कि उसने ख़ुद अपने ही हाथों से अपने अंदर आने के लिए शैतान का रास्ता खोल रखा है।

जो अपने दिल को संभाल कर न रख सके उसका दिल शैतान का अड्डा बन जाता है।

जो अपनी ख़्वाहिशों (Desires) को कन्ट्रोल न कर सके, उस पर शैतान कंट्रोल कर लेता है।

जो दिन में सौ बार शैतान को बुरा-भला तो कहे लेकिन अपने अमल और अपनी ज़िन्दगी में शैतान के बताए रास्ते पर चले वह शैतान का ग़ुलाम है, न कि ख़ुदा का बन्दा।

क्या हमें इस बात पर अफ़सोस नहीं करना चाहिए कि वह इन्सान जिसको ख़ुदा ने इतनी इज़्ज़त देकर इस दुनिया में भेजा था वह अपने दिल को ख़ुदा के नूर से रौशन करने के बजाए शैतानी अड्डा बना ले और ख़ुदा की जगह शैतान को अपने दिल में बिठा ले ?

आख़िर में हम अपनी बात को नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/81 में मौजूद हज़रत अली[अ०] के इस नूरानी और आखें खोल देने वाले कलाम पर ख़त्म करते हैं जिसमें इमाम हमें शैतान और उसकी चालों से इस तरह होशियार करते हैंः

> तुम्हें उस दुश्मन से होशियार कर दिया है जो चुपके से सीनों में घुस जाता है और कानाफूसी करते हुए कानों में फूँक देता है। फिर वह गुमराह करके बर्बाद कर देता है।

जी हाँ! जो ख़ुदा का बन्दा बन जाता है वह शैतान का ग़ुलाम नहीं बनता।

और जो शैतान की चालों और उसके रास्तों को पहचान लेता है वह उस से हारता नहीं है।

इसलिए आंखें खुली रखिए ताकि दुश्मन को दोस्त समझने की ग़लती न हो जाए।



